कक्षा - 12 ❀ साहित्यिक हिन्दी

श्री जगन्नाथ दास रत्नाकर

साहित्यिक परिचय

जगन्नाथ दास रत्नाकर जी का जन्म सन् 1866 ई० में काशी के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। वैश्य परिवार में जन्में रत्नाकर जी के पिता का नाम पुरुषोत्तमदास था विद्यार्थी काल से ही उर्दू, फारसी में कविता लिखते थे कालांतर में ब्रज भाषा में लिखने लगे।

साहित्य सुधानिधि और सरस्वती का सम्पादन, रसिक मंडल का संचालन तथा काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना एवं विकास में योगदान दिया।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन तथा चौथी ओरिएंटल कान्फ्रेंस के हिंदी विभाग के सभापति बनाए गए। इन्होंने अपने काव्य का विषय पौराणिक कथाओं एवं घटनाओं को बनाया है। भक्तिकालीन भावनाओं को रीतिकालीन अलंकार पद्धति में अभिव्यंजित किया है। कला पक्ष में जितनी उतनी भाव पक्ष में भी सफलता प्राप्त हुई।

साहित्य की सेवा में तत्पर हरिद्वार में 21 जून सन् 1932 ई० को पंचतत्व में लीन हो गए।

कृतियाँ —

जगन्नाथ जी द्वारा रचित कुछ प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं —

- उद्धव शतक
- गंगावतरण
- शृंगार लहरी
- गंगालहरी
- विष्णु लहरी
- रत्नाष्टक